17 जुलाई 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

सम्यग्दर्शन-ज्ञान प्रधान चारित्र ही धर्म है और साम्यभावरूप वीतराग चारित्र से परिणत आत्मा ही धर्मात्मा है।

- आ. कुंदकुंद और परमागम, पृष्ठ-56

वर्ष : 33, अंक : 8 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जुलाई (द्वितीय), 2010 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ग्रीष्मावकाश में शिक्षण शिविरों की धूम

मई एवं जून माह में पूरे देश में ग्रुप शिविरों एवं बाल संस्कार शिविरों के माध्यम से अभूतपूर्व धर्म प्रभावना हुई। विगत अंकों में अमरमऊ, सिलवानी, नौगाँव-छतरपुर, जयपुर, इन्दौर, नागपुर, भिण्ड एवं द्रोणगिरी में लगे ग्रुप एवं बाल संस्कार शिविरों के समाचार प्रकाशित किये जा चुके हैं। अब यहाँ दिल्ली, जबलपुर, उदयपुर, अजमेर, अलवर एवं देवलाली-नासिक में लगाये गये ग्रुप एवं बाल संस्कार शिविरों के संक्षिप्त समाचार प्रकाशित किये जा रहे हैं। इन दो महिनों में लगभग २७५ स्थानों पर लगे शिविरों के माध्यम से १५० विद्वानों ने लगभग २२-२५ हजार बालक-बालिकाओं में जैनत्व के संस्कारों का बीजारोपण किया। बालकों के अतिरिक्त हजारों साधर्मियों ने ज्ञान गंगा में स्नान किया।

१. जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 15 से 22 जून तक श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट के सहयोग से आयोजित प्रथम बाल संस्कार शिविर अत्यंत उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित संजयजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर, पण्डित सुधीरजी शास्त्री अमरमऊ, पण्डित विशेषजी शास्त्री बड़ामलहरा एवं पण्डित सुदीपजी शास्त्री बरगी के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

ग्रीन वैली पब्लिक स्कूल परिसर में आयोजित इस शिविर में 8 से 16 वर्ष तक के 280 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। इनको पूजन विधि, जैन तत्त्वज्ञान, सदाचार एवं मोक्षमार्ग की शिक्षा चारों अनुयोगों के माध्यम से दी गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्री प्रसन्नकुमारजी जैन जबलपुर थे। संचालन में अ.भा.जैन युवा फैडरेशन एवं ज्ञान चेतना मंडल के सभी सदस्यों का अपूर्व सहयोग रहा। **- मनोजकुमार जैन**

२. उदयपुर (राज.) : यहाँ हिरणमगरी सेक्टर-11 में दिनाँक 30 मई से 6 जून तक श्री महावीर समवशरण वेदी प्रतिष्ठा एवं बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री उदयपुर एवं पण्डित संदीपजी शास्त्री दिल्ली के प्रवचनों एवं प्रौढ कक्षाओं का लाभ मिला।

बाल कक्षायें डॉ. महावीरप्रसादजी जैन के निर्देशन में पण्डित संजयजी शाह परतापुर, पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित आशीषजी टीकमगढ, पण्डित सचिनजी शास्त्री गढी, पण्डित अश्विनजी नानावटी, पण्डित हेमन्तजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित प्रक्षालजी शास्त्री, पण्डित तपिशजी शास्त्री, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित जयेशजी शास्त्री उदयपुर के सहयोग से संचालित की गयीं।

शिविर के अन्तर्गत डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा एवं श्रीमती किरण जैन द्वारा **अंधकार में प्रकाश की एक किरण** नामक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा एवं पण्डित रजनीभाई दोशी ने समसामयिक प्रश्नों का आगम के आधार से समाधान प्रस्तुत किया। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी लाभ मिला।

शिविर का उद्घाटन श्री कस्तूरचंदजी सिंघवी ने एवं विधान का उद्घाटन श्री कन्हैयालालजी नरेन्द्रकुमारजी राकेशकुमारजी दलावत परिवार ने किया। ध्वजारोहण श्री कुन्तीलालजी ठाकुर्डिया परिवार ने किया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित सुनीलकुमारजी धवल भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी जैन इन्दौर एवं श्री रमेशचंदजी सनावद ने संपन्न कराये।

३. अजमेर (राज.) : यहाँ सीमंधर जिनालय में दिनाँक 22 से 30 जून तक वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के आयोजकत्व में बीसवें बाल एवं युवा चेतना शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर एवं पण्डित जयेशजी शास्त्री उदयपुर के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता श्री रवीन्द्रकुमारजी (चीफ प्रोजेक्ट मैनेजर) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अजीतकुमारजी पाटनी, डॉ. डी.सी. जैन एवं श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन मंचासीन थे। **(शेष पृष्ठ 5 पर ...)**

कहानी

आंखन बाँधी पाटी

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

सुमति के पास सम्पत्ति तो बहुत है, वह बड़ा उद्योगपति है, परन्तु उसके कोई सन्तान नहीं है, इस कारण अब उसे और अधिक धनार्जन करने का वैसा उत्साह नहीं रहा, जैसा प्रारंभिक जीवन में था। अब वह और अधिक धर्नाजन के प्रति उदास रहने लगा। उसने चलते उद्योगों को भी कम कर दिया है।

जब कभी कोई उसकी उदासी का कारण पूछता तो वह कहता – किसके लिए करूँ? हमारे जीवन के लिए तो जो कुछ है, वही बहुत है। अब और अधिक कमाकर क्या करना है।

अतः अनावश्यक रौद्रध्यान क्यों करें? डॉक्टरों के अनुसार जब संतान सुख है ही नहीं तो उसके पीछे क्यों पड़ें?

मित्र चन्द्रमोहन ने पूछा – अभी तक तुमने संतान के लिए कुछ और भी उपाय किए या डॉक्टरों के कहने पर यों ही मान लिया कि भाग्य में संतान सुख है ही नहीं।

सुमति ने कहा – देखो भाई! रागी–द्वेषी देवी–देवताओं की उपासना, मंत्र–तंत्रों की साधना में तथा ज्योतिषियों की घोषणाओं पर तो हमारा बिल्कुल भी विश्वास रहा नहीं है, हाँ ! डॉक्टरों से सलाह ली थी तो उनका कहना है कि – तुम दोनों पूर्ण रूपेण स्वस्थ्य हो। जब तुममें कोई कमी दिखाई ही नहीं देती तो किसका/क्या उपचार करें?

अतः हमने तो अब उस दिशा में सोचना ही बंद कर दिया है। और यह सब तो लौकिक दृष्टि की बातें हैं, पारलौकिक दृष्टि से तो ये संतान सुख कोई सुख ही नहीं है, बल्कि ये सब तो आत्म साधना में बाधक ही हैं? अतः अनावश्यक इनके पीछे क्यों पड़ें? जब ऐसी ही होनहार है तो उसे ही स्वीकार क्यों न करें। हम इस दल–दल में क्यों फँसें?

मित्र ने कहा – ''यह सब तो ठीक है; पर तुम ऐसी बातें मत करो यह तो 'रिपट पड़े की हर–हर गंगा' जैसी बातें लगती हैं। अरे भाई! ऐसे हतास क्यों होते हो? आशा से आसमान लगा है, प्रयत्न करो, तुम्हारी आशा अवश्य पूरी होगी।''

सुमति सोचता है – ''दुनिया में ऐसे सलाहकारों की कमी नहीं है। मुफ्त में सलाह देने वाले इतने हैं कि उन सबकी सुनने लगें तो यह पूरा जीवन ही कम पड़ेगा और किसी की भी न सुनो तो घर–परिवार को टूटने से बचाना मुश्किल है; घर की टूट–फूट से बचने के लिए जिसने जो कहा, अपनी श्रद्धा को सुरक्षित रख कर जो संभव था, वह सब कुछ करके देख लिया फिर भी अन्ततः निराशा ही तो हाथ लगी।

x x x

सुमति ने पुनः सोचा – ''होनहार बलवान होती है। जब जो कार्य होना होता है, उस कार्य के पाँचों समवाय सहज ही मिल जाते हैं। भगवान महावीर स्वामी को दस भव पूर्व सिंह की पर्याय में जब सम्यग्दर्शन प्राप्त होने की पात्रता पकी तो निमित्त के रूप में उस सिंह को संबोधने हेतु संजय–विजय नाम के दो मुनिराज आकाश मार्ग से उतर कर आ गये। तब से यह प्रसिद्ध हो गया कि जब कार्य होना होता है तब निमित्त तो आकाश से उतरकर आ जाते हैं।''

सुमति यह सोच ही रहा था कि एक डॉक्टर मित्र ने उससे कहा – वैसे तो आपने सब प्रयत्न कर ही लिए; परन्तु इन दिनों कुछ नवीन टेक्नालॉजी से उपचार पद्धतियाँ विकसित हुई हैं, भली होनहार होगी तो कोई उपचार पद्धति निमित्त बन सकती है। इसमें आपको कुछ नहीं करना है और कोई रिस्क भी नहीं है। अतः यह प्रयत्न करके और देख लेते हैं।

सुमति ने सोचा – ''दूसरों के कहने पर और परिजनों के संतोष के लिए इतना सब कुछ किया, फिर यह डॉक्टर तो अपना परम हितैषी है, मित्र है, धर्मस्नेही भी है और निःशुल्क सेवा करने को तत्पर हैं, इससे इसकी निःस्वार्थ भावना की झलक मिलती है।'' ऐसा सोचकर सुमति उस डाक्टर की सलाह से सहमत हो गया। उपचार भी हो गया और तत्काल तो रिजल्ट का पता चलना नहीं था। अतः उस समय तो बात आई–गई हो गई।

x x x

महिलाओं को चैन कहाँ पड़ती है। उनको इतना धैर्य कहाँ जो डॉक्टर के रिजल्ट की थोड़ी भी प्रतीक्षा करें। कुछ दिन के बाद एक मंत्रवादी आया, सासूजी ने किसी से भी चर्चा किए बिना बहू को मंत्रित ताबीज पहनवा दिया। उसके कुछ दिन बाद कोई तांत्रिक आया, उससे टोटका करा दिया। अम्मा ने सोचा – 'अब बेटा सुमति तो कुछ करने वाला है नहीं; क्योंकि उसने न चाहते हुए भी लोगों के आग्रह से एक–एक बार सब उपचार कर लिए। अतः अब वह तो कुछ करेगा नहीं। उससे तो कहना ही बेकार है; परन्तु वे पण्डितजी महाराज कह रहे थे कि यदि तुम्हारी बहू मेरे बताये मंत्र का सुबह–शाम जाप करे तो इसकी गोद भर सकती है।

पण्डितजी महाराज के कहे अनुसार सास के कहने पर बहू ने वह मंत्र जपना भी स्वीकार कर लिया, पर किसी से कुछ नहीं हुआ।

कुछ समय बाद जब बहू के संतान होने के लक्षण दिखाई देने लगे तो सासू माँ बहुत प्रसन्न हुई। अब उसने पुत्र सुमति से कहा – 'सुमति! जब तू थककर निराश हो गया तब मैंने तुझे बताये बिना कुछ उपाय किए थे, उनके कारण अब खुशियों के दिन आने वाले हैं।

उधर मंत्र–तंत्रवादी और पूजा–पाठ करनेवाले अपने–अपने दावे करने लगे, परन्तु जब हिसाब लगाकर देखा तो मित्र डॉक्टर के उपचार के ठीक नौ माह बाद बहू की गोद भरी तो सभी मंत्र–तंत्रवादी और पण्डितजी के चेहरे पीले पड़ गये; क्योंकि इन मंत्र–तंत्र वादियों और पूजा पाठ वालों ने तो अभी ही मंत्र–तंत्र किए थे, बालक तो बहू के उदर में उसके पूर्व ही आ चुका था। माताजी एवं सब परिजनों और मंत्र तंत्रों का दावा करने वालों की समझ में तो साफ–साफ आ गया था कि सफलता का राज

क्या है? परन्तु सब चुप थे।

सुमति स्वाध्यायी और तत्वाभ्यासी था उसने सोचा – ''काम तो उपादान में हुआ और तत्समय की योग्यता से ही हुआ, बाह्य सभी साधन तो निमित्त मात्र हैं, शास्त्रों के अनुसार सभी निमित्त अकिंचित्कर ही होते हैं; पर होते अवश्य हैं, जब कार्य होना होता है तब वे सब समवाय भी होते ही हैं; ऐसा ही कार्य–कारण सम्बन्ध हैं।''

फिर भी सुमति ने पण्डितों, ज्योतिषियों और मंत्र–तंत्रवादियों से कहा – ''आप सबने जो सहानुभूति दिखाई, एतदर्थ हम आप सबके हृदय से आभारी हैं। अब हम सब मिलकर खुशियाँ मनायें, मिष्ठान्न से मुँह मीठा करें और आगंतुक मेहमान को मंगल आशीर्वाद प्रदान करें।

x x x

बालक बहुत दिनों बाद हुआ था देखने में सुन्दर था, अतः उसका नाम सुदर्शन रख दिया गया। माँ की गोद बहुत प्रतीक्षा के बाद भरी थी, अतः बालक सुदर्शन पर आवश्यकता से अधिक लाड़–प्यार होना तो स्वाभाविक ही था, इसकारण उससे कोई कुछ भी नहीं कहता था। उसके दोषों को देखकर भी माता–पिता द्वारा अनदेखा करने से धीरे–धीरे उसमें कुछ बुरी आदतें पड़ गईं।

बालक सुदर्शन देर रात तक घर नहीं आता, दोस्तों के साथ जुआ खेलता, धीरे–धीरे बुरे दोस्तों की कुसंगति से नगरनारियों के यहाँ भी आने–जाने लगा।

जब माता–पिता को यह पता चला तो वे चिंतित हो गये। वे बालक को रोक–टोक कर उसका दिल नहीं दुखाना चाहते थे। अतः परस्पर में कहने लगे – हाय! हाय!! अब क्या करें? कुछ समझ में नहीं आता।

सौभाग्य से, बालक की भली होनहार से, मानो उसके ही निमित्त से नगर में एक मुनि संघ का आगमन हुआ। सभी नगरवासी धर्मप्रेमी मुनिसंघ के दर्शनार्थ उमड़ पड़े। सुमति भी सपत्नीक मुनिसंघ के दर्शनार्थ गया। जब सभी जनता दर्शन करके वापिस चली गई तो एकान्त पाकर सुमति ने संघ के आचार्य श्री के समकक्ष अपनी समस्या रखी।

मुनिसंघ के आचार्य श्री पहले तो तनिक मुस्कराये, फिर बोले – 'कोई बात नहीं, आप चिन्ता न करें। मैं जैसा कहता हूँ वैसा करो! सब ठीक हो जायेगा।'

आचार्यश्री ने कहा – बालक सुदर्शन यथा नाम तथा गुण सम्पन्न है, वह सीधा है, भोला है; अभी कुछ नहीं बिगड़ा। तुम्हारा आवश्यकता से अधिक लाड़–प्यार पाकर कुछ बहक गया है। तुम बाल मनोविज्ञान को नहीं जानते। बालक जिस खिलौना से खेल रहा हो, उससे अच्छा, आकर्षक खिलौना उसे दे दो तो वह पुराना खिलौना छोड़कर नये खिलौने से खेलने लगता है।

तुम्हारे पास पैसा तो अटूट है ही, तुम अपने बराबरी का रिश्ता न ढूँढकर यदि निर्धन व्यक्ति की भी सर्वांग सुन्दर गुणवती कन्या हो तो उसे तुम अपनी ओर से सुदर्शन की शादी का प्रस्ताव भेज दो। उससे शादी होते ही वैश्या का संग स्वतः छोड़ देगा। सुमति ने ऐसा ही किया।

जब यह बात गणिका को ज्ञात हुई तो वह चिन्तित हो गई। उसकी चिन्ता मात्र एक ग्राहक छूट जाने की नहीं थी, उसके तो सारे सपने ही बिखर गये थे। वह गणिका तो सुदर्शन के सद्गुणों से ऐसी प्रभावित हुई, उस पर ऐसी रीझ गई थी कि वह वैश्यावृत्ति का व्यवसाय छोड़कर सुदर्शन से शादी करके घर बसाना चाहती थी। इसकारण वह बहुत दुःखी हुई।

एक दिन उसे एक उपाय सूझा और वह सुदर्शन की प्रतीक्षा में उदास होकर बैठ गई। समय पर सुदर्शन आया और उसने उस वैश्या से उदासी का कारण पूछा तो उस वैश्या ने कहा – ''एक ज्योतिषी आया था .... वह पूरा वाक्य बोल ही नहीं पायी कि सुदर्शन ने उत्सुकता से पूछा – क्या कहता था वह?''

वैश्या बोली – ''वह कहता था कि सुदर्शन की जिस लड़की से शादी हो रही है उसका मुँह देखते ही सेठ पुत्र सुदर्शन की दोनों आँखें चली जायेंगी, वह अँधा हो जायेगा। यह जानकर मुझे बहुत दुःख है। मेरी समझ में नहीं आता, मैं आपके लिए क्या कर सकती हूँ?''

तब सुदर्शन ने कहा – ''तू चिन्ता क्यों करती है? मैं शादी तो नहीं रुकवा सकता, पर मैं उसका मुँह ही नहीं देखूँगा।''

यह सुनकर वैश्या को कुछ शान्ति मिली। विवाह होने के पहले से ही सुदर्शन ने आँखों पर पट्टी बाँध ली। जब लोगों ने पूछा – ''यह क्या है? तुमने आँखों पर पट्टी क्यों बाँधी? खोलो इसे।'' तो सुदर्शन ने कहा – ''मेरी आँखों में बहुत दर्द है। मैं पट्टी नहीं खोल सकता।''

शादी की तिथि पहले से तय हो चुकी थी, सभी तैयारियाँ हो गईं थीं, आमंत्रण पत्र जा चुके थे। तिथि टालना संभव नहीं था। अतः पट्टी बाँधे–बाँधे ही शादी हुई। बहू आई, कुछ दिन रही, जब तक बहू रही तब तक उसने आँखों की पट्टी नहीं खोली।

श्रावण–भादों पर्व के दो माह बाद जब बहू पुनः आई, तब भी सुदर्शन को आँखों पर पट्टी बाँधे देख बुद्धिमान बहू समझ गई कि ''दाल में कुछ काला है।'' जब सुदर्शन ऑफिस जाने लगा तो बहू ने कहा – जब आँखों पर पट्टी बंधी है तो आफिस क्यों जाते हो? घर पर ही विश्राम करो।

सुदर्शन यह कह कर ऑफिस चला गया कि 'यहाँ बैठे–बैठे मैं बोर होता हूँ ' तो बहू ने अपनी दासी को पीछे लगा दिया और कहा कि पता लगाओ कि ये ऑफिस में क्या करते हैं और कहाँ–कहाँ जाते हैं? दासी ने सुदर्शन की दिनभर की चर्या ज्ञात कर सुनीता को पूरी रिपोर्ट दे दी।

सुदर्शन की पत्नी बुद्धिमान तो थी ही, उसे सुदर्शन की सारी स्थिति समझ में आ गई। सुदर्शन के घर आने पर एक दिन उसकी पत्नी सुनीता भी उदास होकर बैठ गई। जब आँखों पर पट्टी बाँधें–बाँधें सुदर्शन ने पूछा कि ''कहाँ हो, बोलती क्यों नहीं, किसने क्या कह दिया है किसने तुम्हारा दिल दुःखाया? मैं तुम्हें दुःखी नहीं देख सकता। बोलो! सच–सच बताओ, मैं तुम्हारी समस्या का सही समाधान करूँगा।''

पत्नी सुनीता ने कहा – ''आपके रहते भला कौन मुझसे बदसलूकी कर सकता है। मैं आपकी छत्रछाया में पूर्ण सुखी हूँ; किन्तु दुःख इस बात का है कि ....।'' पत्नी पूरी बोल भी नहीं पाई कि सुदर्शन बोला –

''किन्तु, परन्तु करके पहेलियाँ क्यों बुझाती हो? साफ–साफ कहो तुमसे किसने क्या कहा? कहो कहो ! खुलकर कहो ! बात क्या है ?''

पत्नी ने कहा–''और कुछ बात नहीं है; एक ज्योतिषी आया था।''

पति सुदर्शन ने उत्सुकता से पूछा – ''क्या कहता है वह ज्योतिषी?''

पत्नी ने कहा – ''वह कहता था कि जब तक तुम्हारा पति तुम्हारा मुँह नहीं देखेगा तब तक तुम्हारे व्यापार में घाटा चलता ही रहेगा और यह स्थिति लम्बे काल तक चली तो दिवाला भी निकल सकता है।''

सेठ पुत्र बोला – ''ये ज्योतिषी भी विचित्र हैं – एक कहता है कि पत्नी का मुँह देखोगे तो अंधे हो जाओगे और दूसरा कहता है कि – पत्नी का मुँह नहीं देखोगे तो दिवाला निकल जायेगा। किसकी मानू, किसकी न मानू, पट्टी खोलूँ या न खोलूँ यही समझ में नहीं आता।''

पत्नी बुद्धिमान थी उसने कहा–''इसका एक उपाय है मेरे पास...। बात पूरी न हुई थी कि उत्सुकता से सुदर्शन ने पूछा – क्या! क्या!! कहो! जल्दी कहो?''

सुनीता ने कहा – ''तुम मुझे एक आँख खोल कर देखो। यदि वह आँख फूट जाय या उससे दिखना बंद हो जाय तो दूसरी आँख मत खोलना। इससे तुम दोनों हानियों से बच जाओगे। दिखता भी रहेगा और दीवाला भी नहीं निकलेगा।

यह बात सुदर्शन की समझ में आ गई और उसने पत्नी के कहे अनुसार वैसा ही किया। पट्टी खोलते ही सारा राज खुल गया। सुदर्शन के समझ में आ गया कि यह सब वैश्या की चाल थी। उसके छलभरे व्यवहार के कारण सुदर्शन को उससे घृणा हो गई। उसने सोचा – ''इसके कारण ही मैं आज तक इतनी गुणवती और रूपवती पत्नी को दुःखी करता रहा और अब तक ऐसे रूपलावण्य को देखने से वंचित रहा।''

जिस तरह सुदर्शन ने वैश्या के कहने पर अपनी आँखों पर पट्टी बाँध ली तो वह अपनी पत्नी के रूप लावण्य को देखने से वंचित रहा। उसी प्रकार – जो जीव अपने विवेक रूपी नेत्रों पर मोह की पट्टी बाँधकर रखेगा तो वह अपने उस भगवान आत्मा, कारण परमात्मा को देख नहीं पायेगा, जो कि लोक में सबसे सुन्दर हैं।[१] अतः परमात्मपद पाने के लिए उस एकत्व–विभक्त सर्व सुन्दर आत्मा का ही आश्रय करो, उसमें ही जमो रमो तो पूर्ण सुखी हो जाओगे।

इसीलिए कविवर दौलतरामजी ने भी ठीक ही कहा है कि –

अरे जिया! जग धोखे की टाटी।
झूठा उद्यम लोक करत है, जिसमें निशदिन घाटी।।टेक।।
जानबूझकर अंधभयो है, आँखन बाँधी पाटी।।१।।
निकल जायेंगे प्राण छिनक में, पड़ी रहेगी माटी।।२।।
'दौलतराम' समझ मन अपने दिल की खोल कपाटी।।३।। ●

१. एयत्तणिच्छयगदो, समओ सव्वत्थ सुन्दरो लोए।
बंधकहा एयत्ते तेण विसंवादिणी होदि।।

अर्थ :– एकत्व निश्चय को प्राप्त समय (आत्मा) ही लोक में सर्वत्र सुन्दर है। एकत्व में दूसरे के साथ बंध की कथा विसंवाद पैदा करने वाली है।

अतः यदि विसंवाद से बचना है तो एकत्व को ही अपनाना श्रेयस्कर है।

आ. कुन्दकुन्ददेव, समयसार गाथा – ३

नहीं मिलेंगे, नहीं मिलेंगे

पूरे जैनधर्म के इतिहास में
भगवान महावीर जैसे गुरु
और इंद्रभूति गौतम जैसे शिष्य
नहीं मिलेंगे, नहीं मिलेंगे।

जैन आगम के इतिहास में
आचार्य धरसेन जैसे गुरु
और भूतबली और पुष्पदंत जैसे शिष्य
नहीं मिलेंगे, नहीं मिलेंगे।

आचार्य भूतबली और पुष्पदंत जैसे गुरु
और आचार्य वीरसेन जैसे शिष्य
नहीं मिलेंगे, नहीं मिलेंगे।

जैन अध्यात्म के इतिहास में
आचार्य कुन्दकुन्द जैसे गुरु
और आचार्य अमृतचंद्र व जयसेन जैसे शिष्य
नहीं मिलेंगे नहीं मिलेंगे।

आचार्य उमास्वामी जैसे गुरु
और आचार्य पूज्यपाद देवनंदी,
आचार्य विद्यानंदी और भट्ट अकलंक जैसे शिष्य
नहीं मिलेंगे नहीं मिलेंगे।

जैन न्याय के इतिहास में
स्वामी समन्तभद्र जैसे गुरु
और आचार्य विद्यानंदी जैसे शिष्य
नहीं मिलेंगे नहीं मिलेंगे।

आचार्य माणिक्यनंदी जैसे गुरु और
आचार्य प्रभाचन्द्र जैसे शिष्य
नहीं मिलेंगे नहीं मिलेंगे।

जैन पुराण इतिहास में
आचार्य जिनसेन जैसे गुरु
और आचार्य गुणभद्र जैसे शिष्य
नहीं मिलेंगे नहीं मिलेंगे।

जैन सिद्धान्त शास्त्रों के इतिहास में
आचार्य नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती जैसे गुरु
और चामुण्डराय जैसे शिष्य
नहीं मिलेंगे नहीं मिलेंगे।

पूरे मुमुक्षु समाज में
पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी जैसे गुरु
और डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जैसे शिष्य
नहीं मिलेंगे नहीं मिलेंगे।

टोडरमल महाविद्यालय के इतिहास में
आप जैसे गुरु और मुझ जैसे शिष्य
नहीं मिलेंगे नहीं मिलेंगे।

– बाहुबली भासगे

(पृष्ठ 1 का शेष...)

अन्तिम दिन शिशुवर्ग एवं बालवर्ग की परीक्षाएं लेकर विशेष योग्यता प्राप्त छात्रों को पुरस्कृत किया गया। सभा की अध्यक्षता श्री मोतीचंदजी गदिया ने की मुख्य अतिथि श्री अजितजी पाटनी थे। आभार प्रदर्शन श्री प्रकाशचंदजी पाण्ड्या ने किया। शिविर में वीतराग–विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के संस्थापक एवं अध्यक्ष श्री पूनमचंदजी लुहाड़िया भी उपस्थित थे।

४. अलवर (राज.) : अ.भा.जैन युवा फैडरेशन शाखा अलवर द्वारा द्वितीय बाल संस्कार ग्रुप शिविर का आयोजन तीन चरणों में किया गया।

प्रथम चरण दिनाँक १६ से २५ मई, द्वितीय चरण दिनाँक २१ से ३० मई एवं तृतीय चरण ६ से १४ जून तक रखा गया। तीनों चरणों में अलवर, दौसा, भरतपुर, सवाईमाधोपुर, जयपुर, टोंक, बूंदी एवं झालावाड जिले के कुल ३५ स्थानों पर ३६ विद्वानों के माध्यम से लगभग २५०० साधर्मी लाभान्वित हुये।

प्रथम चरण में लक्ष्मणगढ, हरसान, अलवर शहर ६० फुट, नन्दीश्वर जिनालय, चेतन एन्क्लेव, शाहजी का चौक, शिवाजी पार्क, आदिनाथ मंदिर, बसन्त विहार, काला कुंआ, गोविन्दगढ आदि स्थानों पर, **द्वितीय चरण** में देवली, गंगापुरसिटी, तुंगा, लवाण, दौसा, छारेड़ा, मंडावर, महुआ रोड़, सिकन्दर, जुरहरा, बयाना, डीग, कुम्हेर आदि स्थानों पर तथा **तृतीय चरण** में बूंदी, तालेड़ा, भण्डाना आदि स्थानों पर शिविर लगाया गया।

शिविर का उद्घाटन समारोह श्री रत्नत्रय दि.जैन मंदिर, चेतन एन्क्लेव में हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ.राकेशजी शास्त्री नागपुर ने की। मुख्य अतिथि पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया अलीगढ तथा विशिष्ट अतिथि पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा थे। ध्वजारोहण श्री अनिलजी जैन स्वस्तिक टाइसन्स अलवर ने किया।

इस आयोजन में श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर एवं आचार्य अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा के विद्वानों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। स्थानीय विद्वानों में पण्डित अरुणजी शास्त्री, पण्डित प्रेमचंदजी शास्त्री एवं पण्डित अजितजी शास्त्री का लाभ मिला।

शिविर स्थलों का निरीक्षण पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा एवं फैडरेशन अध्यक्ष श्री शशिभूषण जैन ने किया।

शिविर का आयोजन श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट अलवर एवं श्री दि.जैन साहित्य प्रकाशन समिति अलवर के सहयोग से किया गया।

शिविर का समापन समारोह कला भारती रंगमंच अलवर पर किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री महावीरप्रसादजी जैन–थानेदार साहब अलवर (अध्यक्ष – श्री दि.जैन साहित्य प्रकाशन समिति) ने की। मुख्य अतिथि पण्डित नागेशजी जैन पिडावा एवं विशिष्ट अतिथि श्री टी.सी.जैन एडवोकेट भरतपुर, श्री जिनेन्द्रजी जैन जयपुर एवं श्री धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर थे।

सम्पूर्ण शिविर पं.अजितजी शास्त्री अलवर के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

५. देवलाली–नासिक (महा.) : यहाँ दिनाँक 1 से 8 मई तक पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली एवं अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण शिविर के पूर्व लगे इस शिविर में लगभग 600 बालकों ने धर्मलाभ लिया। इस शिविर में मुम्बई के अतिरिक्त महाराष्ट्र के अनेक गांवों से सैंकड़ों साधर्मीजनों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

शिविर एवं समयसार महामंडल विधान संपन्न

दिल्ली : यहाँ दिलशाद गार्डन में दिनाँक 12 से 20 जून तक आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन दिलशाद गार्डन के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं श्री समयसार परमागम महामंडल विधान संपन्न हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्री अजितप्रसादजी–श्रीमती सुशीलाजी एवं श्री वैभव–श्रीमती स्वाति जैन राजपुर रोड़ दिल्ली थे।

इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राजमलजी पवैया भोपाल, पण्डित लालजीरामजी सोनागिर, पण्डित बसंतजी बड़जात्या सोनागिर, डॉ. विनोदजी शास्त्री विदिशा, पण्डित नागेशजी पिड़ावा, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, श्री अनुभवजी जैन गुना आदि के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

स्थानीय विद्वानों में डॉ. सुदीपजी शास्त्री, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री, पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित अशोकजी गोयल, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित संजीवजी जैन उस्मानपुर आदि का भी मंगल सानिध्य प्राप्त हुआ। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

अन्तिम दिन आगन्तुक अतिथियों का आभार प्रदर्शन एवं सम्मान समारोह संपन्न हुआ, जिसके अन्तर्गत कविवर पण्डित राजमलजी पवैया को **कविसम्राट**, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर को **ज्ञानरत्न** एवं पण्डित विमलचंदजी झांझरी को दिल्ली जैन समाज की ओर से **विद्वत् रत्न** की उपाधियुक्त अभिनन्दन–पत्र भेंटकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के 2700 हिन्दी प्रवचनों की डी.वी.डी. सेट का विमोचन पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन के करकमलों से किया गया।

विधि–विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में विधानाचार्य डॉ. मुकेशजी शास्त्री विदिशा ने संपन्न कराये।

संपूर्ण कार्यक्रम पण्डित अशोकजी शास्त्री, श्री नीरजजी जैन, श्री सुरेन्द्रजी जैन मिन्टू एवं श्री सुरेन्द्रजी शास्त्री के संयोजन में सम्पन्न हुये।

शाकाहार दिवस मनायें

अ.भा. जैन युवा फैडरेशन की ओर से 9 अगस्त, 2010 को शाकाहार दिवस मनाया जा रहा है। फैडरेशन की सभी शाखाओं से अनुरोध है कि वे अपने गांव–शहर में शाकाहार से संबंधित प्रतियोगितायें, नाटक, रैली आदि आयोजित करें।

पिछले वर्ष इसी दिन जयपुर महानगर शाखा ने उच्च स्तर पर **संकल्प** नामक नाटक का आयोजन किया था तथा उदयपुर, अलवर, कोटा और बांसवाड़ा में भी अनेक गतिविधियों द्वारा शाकाहार का प्रचार–प्रसार हुआ था। इस बार इसे राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का प्रयत्न करें। शाकाहार पर किये गये कार्यक्रमों की सूचना प्रकाशनार्थ जयपुर कार्यालय अवश्य भेजें।

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

56 चौदहवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

द्रव्य अपेक्षा तो परद्रव्य से भिन्नता और अपने भावों से अभिन्नता का नाम ही शुद्धता है और **पर्याय अपेक्षा** औपाधिक भावों के अभाव होने का नाम शुद्धता है।

अपनी बात पुष्ट करने के लिए उन्होंने समयसार गाथा ६ और गाथा ७३ की टीका में समागत जो पंक्तियाँ प्रस्तुत की हैं; वे इसप्रकार हैं –

''एष एवाशेषद्रव्यान्तरभावेभ्यो भिन्नत्वेनोपास्यमानः शुद्ध इत्यभिलप्यते।

इसका अर्थ यह है कि आत्मा प्रमत्त-अप्रमत्त नहीं है। यही समस्त परद्रव्यों के भावों से भिन्नपने द्वारा सेवन किया गया शुद्ध ऐसा कहा जाता है।

तथा वहीं ऐसा कहा है –

समस्तकारकचक्रप्रक्रियोत्तीर्णनिर्मलानुभूतिमात्रत्वाच्छुद्धः।

समस्त ही कर्ता, कर्म आदि कारकों के समूह की प्रक्रिया से पारंगत ऐसी निर्मल अनुभूति, जो अभेदज्ञान तन्मात्र है, उससे शुद्ध है। इसलिए ऐसा शुद्ध शब्द का अर्थ जानना।[१]''

इसीप्रकार केवल शब्द का अर्थ भी परभावों से भिन्न नि:केवल आप ही किया है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि निश्चयनय से आत्मा को जो शुद्ध-बुद्ध कहा है; उसमें शुद्धता का अर्थ तो परपदार्थों से भिन्नता और कारकचक्र की प्रक्रिया से पार होना है और बुद्धता का अर्थ केवल अर्थात् मात्र ज्ञानस्वभावी है; किन्तु ये निश्चयाभासी लोग शुद्ध का अर्थ रागादि से रहित करते हैं और बुद्ध का अर्थ केवलज्ञानपर्याय से संयुक्त करते हैं। यह इनका अज्ञान है।

यही कारण है कि पण्डितजी अन्त में अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि **वर्तमान में स्वयं को पर्याय अपेक्षा शुद्ध मानने और केवलज्ञानी मानने में महाविपरीतता है; इसलिए अपने को द्रव्य-पर्यायरूप अवलोकन करना।**

इसप्रकार के अवलोकन से सम्यग्दृष्टि होता है; क्योंकि सच्चा अवलोकन किये बिना सम्यग्दृष्टि नाम कैसे प्राप्त करें ?

निश्चयाभासी की प्रवृत्ति का चित्रण करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं ह्न

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ १९९

''शास्त्राभ्यास करना निरर्थक बतलाता है; द्रव्यादिक के तथा गुणस्थान, मार्गणा, त्रिलोकादि के विचार को विकल्प ठहराता है; तपश्चरण करने को वृथा क्लेश करना मानता है; व्रतादिक धारण करने को बन्ध में पड़ना ठहराता है; पूजनादि कार्यों को शुभास्रव जानकर हेय प्ररूपित करता है इत्यादि सर्वसाधनों को उठाकर प्रमादी होकर परिणमित होता है।[१]''

निश्चयाभासी की उक्त प्रवृत्ति पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''यदि शास्त्राभ्यास निरर्थक हो तो मुनियों के भी तो ध्यान और अध्ययन दो ही कार्य मुख्य हैं। ध्यान में उपयोग न लगे तब अध्ययन ही में उपयोग को लगाते हैं, बीच में अन्य स्थान में उपयोग लगाने योग्य नहीं हैं। तथा शास्त्राभ्यास द्वारा तत्त्वों को विशेष जानने से सम्यग्दर्शन-ज्ञान निर्मल होता है।

तथा वहाँ जबतक उपयोग रहे, तबतक कषाय मन्द रहे और आगामी वीतरागभावों की वृद्धि हो; ऐसे कार्य को निरर्थक कैसे मानें ?[२]''

उन्हीं में से कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि आध्यात्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय करना तो ठीक है; पर अन्य शास्त्रों के अध्ययन में समय खराब करने से क्या लाभ है ?

उनसे कहते हैं कि यदि दृष्टि सही हो तो सभी जैनशास्त्र उपयोगी ही हैं। अध्यात्म शास्त्रों में जिस भगवान आत्मा का स्वरूप बताया गया है, सम्यग्दर्शन होने पर न केवल उसका ज्ञान हो जाता है; अपितु अनुभव भी हो जाता है। अत: अब तो ज्ञान की निर्मलता के लिए, कषायों को मंद रखने के लिए ही स्वाध्याय की आवश्यकता है।

अरे भाई ! सम्पूर्ण जिनवाणी वीतरागी संतों, आचार्य भगवन्तों द्वारा ही लिखी गयी है और उपाध्याय परमेष्ठी, मुनिराजों को चारों अनुयोगों में विभक्त संपूर्ण जिनवाणी का अध्ययन कराते हैं। यदि उनका स्वाध्याय करना निरर्थक होता तो फिर चारों अनुयोगों के शास्त्रों को आचार्यदेव क्यों लिखते और उपाध्याय परमेष्ठी उन्हें क्यों पढाते तथा साधुजन भी उनका अध्ययन क्यों करते ?

ये निश्चयाभासी उन आचार्य भगवंतों, उपाध्यायों और आत्मसाधना में रत सन्तों से भी बड़े अध्यात्मी हो गये हैं कि जिससे इन्हें अध्यात्मशास्त्रों के अतिरिक्त अन्य शास्त्रों का पढना-पढाना निरर्थक लगने लगा है।

ज्ञानी धर्मात्माओं को ज्ञानी-ध्यानी कहा जाता है; क्योंकि उनके जीवन में ज्ञान (स्वाध्याय) और ध्यान – इन दो कार्यों की

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २०० २. वही, पृष्ठ २००

ही मुख्यता होती है। इनमें भी आत्मसाधनारत साधुओं के स्वाध्याय की अपेक्षा ध्यान की मुख्यता विशेष होती है और ज्ञानी गृहस्थों के ध्यान की अपेक्षा स्वाध्याय की मुख्यता रहती है; क्योंकि गृहस्थ की भूमिका में उपयोग अधिक समय तक आत्मध्यान में स्थिर नहीं रहता।

वस्तुस्थिति ऐसी होने पर भी प्रत्येक अंतर्मुहूर्त में आत्मा में डुबकी लगानेवाले मुनिराजों द्वारा ही सभी शास्त्र लिखे गये, लिखे जाते हैं और उपाध्यायों द्वारा पढाये जाते हैं; संतगण व व्रती ज्ञानी श्रावक पढते हैं। पर यह अनुभवहीन निश्चयाभासी सामान्य गृहस्थ होने पर भी अध्यात्म शास्त्रों को छोड़कर अन्य शास्त्रों के स्वाध्याय का निषेध करता है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि यह निश्चयाभासी गृहीत मिथ्यादृष्टि न केवल धार्मिक क्रियाकाण्ड का निषेध करता है; अपितु शास्त्राभ्यास का भी निषेध करता है। प्रमाद का पोषण करनेवाला यह आँख बन्द किये पड़ा रहता है और स्वयं को ज्ञानी–ध्यानी मानता है।

यद्यपि आत्मरुचि के पोषण के लिए अध्यात्म शास्त्रों का स्वाध्याय अत्यन्त उपयोगी है; तथापि अन्य शास्त्रों में अरुचि होना तो ठीक नहीं है। पण्डितजी तो यहाँ तक कहते हैं कि जिसे अन्य शास्त्रों की अरुचि है, उसे अध्यात्म की रुचि भी सच्ची नहीं है।

जब विषयासक्त पुरुषों को विषयासक्त पुरुषों की कथायें अच्छी लगती हैं; तब आत्मरुचि संपन्न पुरुषों को आत्मानुभवी तीर्थंकरादि महापुरुषों की कथाओं में अरुचि कैसे हो सकती है ?

टोडरमलजी तो यहाँ तक कहते हैं कि सम्यग्दर्शन होने के पहले और बाद में भी चारों अनुयोगों का अध्ययन तो उपयोगी है ही, साथ ही थोड़ा–बहुत न्याय–व्याकरणादिक का अध्ययन भी होना चाहिए; क्योंकि उसके बिना शास्त्रों का अर्थ खुलता नहीं है।

उक्त प्रकरण में पण्डितजी चारों अनुयोगों और थोड़ा–बहुत न्याय–व्याकरणादि पढने की आवश्यकता को अनेक युक्तियों से समझाते हैं।

जो लोग सम्पूर्ण जिनागम के स्वाध्याय को निरर्थक समझते हैं; उन्हें उक्त प्रकरण का गहराई से स्वाध्याय करना चाहिए।

पण्डित टोडरमलजी के नाम पर स्थापित श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में हमने उनके मार्गदर्शनानुसार ही पाठ्यक्रम सुनिश्चित किया है।

इस पर कोई कहता है कि आचार्य पद्मनन्दि ने पद्मनन्दि पंचविंशतिका में आत्मस्वरूप से निकलकर बाह्य शास्त्रों में विचरण करनेवाली बुद्धि को व्यभिचारिणी कहा है।

उत्तर में पण्डितजी शीलवती स्त्री का उदाहरण देते हुए कहते हैं –

''यह सत्य ही कहा है; क्योंकि बुद्धि तो आत्मा की है, उसे छोड़कर परद्रव्य अर्थात् शास्त्रों में अनुरागिनी हुई; अत: उसे व्यभिचारिणी कहा है।

परन्तु जैसे स्त्री शीलवती रहे तो योग्य ही है और न रहा जाय तब उत्तम पुरुष को छोड़कर चाण्डालादिक का सेवन करने से तो अत्यन्त निन्दनीय होगी; उसीप्रकार बुद्धि आत्मस्वरूप में प्रवर्ते तो योग्य ही है और न रहा जाये तो प्रशस्त शास्त्रादि परद्रव्यों को छोड़कर अप्रशस्त विषयादि में लगे तो महानिन्दनीय ही होगी।

सो मुनियों की भी स्वरूप में बहुत काल बुद्धि नहीं रहती, तो तेरी कैसे रहा करे ? इसलिए शास्त्राभ्यास में उपयोग लगाना योग्य है।[१]''

पण्डित टोडरमलजी की एक विशेषता यह है कि वे शंकाकार की बात में प्राप्त सत्यांश को स्वीकार करते हुए अत्यन्त वात्सल्यभाव से अपरपक्ष को प्रस्तुत करके सम्पूर्ण सत्य को स्पष्ट कर देते हैं। यहाँ भी उन्होंने इसीप्रकार का प्रयोग किया है।

यहाँ पर उन्होंने आचार्य पद्मनन्दि के कथन को असत्य नहीं कहा; अपितु शीलवती महिला के उदाहरण से अपर पक्ष को समझाते हुए बड़ी ही चतुराई से सम्पूर्ण सत्य को स्थापित कर दिया।

उक्त उदाहरण का भाव यह है कि पूर्ण ब्रह्मचर्य से रहना तो सर्वश्रेष्ठ है ही; किन्तु यदि यह संभव न हो और शादी करने का विकल्प आये तो कुलीन व्यक्ति से करना योग्य है, हीन कुलवालों से नहीं।

उक्त उदाहरण के माध्यम से पण्डितजी यह समझाना चाहते हैं कि आत्मानुभव में रहना तो सर्वश्रेष्ठ है ही; किन्तु **जब उपयोग आत्मानुभव में न रहे, तब अपने उपयोग को जिनवाणी के स्वाध्याय में लगाना चाहिए; क्योंकि पंचेन्द्रियों के विषयों में लगा उपयोग तो पापबंध का कारण है।**

अरे भाई ! यहाँ यह थोड़े ही कहा जा रहा है कि आत्मानुभव छोड़कर जगत को जानों। यहाँ तो यह कहा जा रहा है कि जब उपयोग आत्मानुभव में न रहे, तब जिनागम के अध्ययन में उपयोग को लगाओ।

पण्डितजी अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं कि जब मुनिराजों का उपयोग भी अधिक काल तक आत्मा में नहीं रहता, तब गृहस्थों का उपयोग अधिक काल तक आत्मा में कैसे रह सकता है ? अत: गृहस्थों को तो अध्ययन और ध्यान में अध्ययन की ही मुख्यता है।

(क्रमश:)

---

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २०१

17 जुलाई 2010, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के नवीन सत्र के छात्रों का -

परिचय सम्मेलन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ दि.जैन मंदिर फागीवाला आमेर में दिनाँक ११ जुलाई को श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के नवीन छात्रों का परिचय सम्मेलन आयोजित किया गया।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, उपप्राचार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. श्रीयांसजी सिंघई, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई, श्री अजितकुमारजी तोतुका, श्री शांतिलालजी अलवर, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं पण्डित सोनूजी शास्त्री आदि मंचासीन थे। इन सभी का मार्गदर्शन छात्रों को प्राप्त हुआ।

परिचय के क्रम में पण्डित आकाशजी शास्त्री एवं पण्डित रजितजी शास्त्री ने शास्त्री तृतीय वर्ष, पण्डित अभिजीतजी पाटील, पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित अशोकजी शास्त्री ने शास्त्री द्वितीय वर्ष, पण्डित सनतजी शास्त्री एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री ने शास्त्री प्रथम वर्ष, पण्डित निलयजी शास्त्री एवं पण्डित कुलभूषणजी शास्त्री ने प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष तथा पण्डित बाहुबलीजी शास्त्री एवं प्रशांतजी शास्त्री ने प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष का परिचय दिया।

सभा का सफल संचालन वीरेन्द्र बकस्वाहा, जयेश जैन उदयपुर एवं भावेश जैन उदयपुर ने किया। कार्यक्रम के संयोजन में शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों का अपूर्व योगदान रहा।

सम्मेलन से पूर्व आमेर के प्राचीन जैन मंदिरों की सामूहिक वन्दना एवं जिनेन्द्र पूजन का भी कार्यक्रम रखा गया।

हार्दिक बधाई !

सीकर निवासी श्री फतेहचंदजी जैन एवं श्रीमती सुलोचनादेवी जैन (धोदवाले) के दाम्पत्य जीवन के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण होने पर हार्दिक बधाई। इस अवसर पर वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 250-250/- दानस्वरूप प्राप्त हुये।

आवश्यकता है !

सोनागिर (म.प्र.) : यहाँ आचार्य कुन्दकुन्द विद्यानिकेतन में 8वीं एवं 9 वीं कक्षा में 28 छात्र अध्ययनरत हैं, जिन्होंने इस वर्ष देवलाली प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। ऐसे आत्मार्थी छात्रों को जुलाई-2010 से जैनदर्शन के ग्रन्थों के अध्ययन हेतु सुयोग्य शास्त्री विद्वान की आवश्यकता है, जो यहाँ रहकर छात्रों को धार्मिक व नैतिक संस्कारों के साथ आध्यात्मिक शिक्षा भी प्रदान कर सके। आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था के साथ योग्यतानुसार वेतन देय होगा।

- लालजीराम जैन, प्रभारी

दम्पत्ति शिविर एवं विधान सम्पन्न

लूणदा-उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनाँक 25 से 27 मई तक सकल दि.जैन समाज लूणदा द्वारा राजस्थान का प्रथम दम्पत्ति शिविर एवं 64 ऋद्धि विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित सुनीलजी नाके, पण्डित निलयकुमारजी शास्त्री, पण्डित संदीपकुमारजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अश्विनजी शास्त्री, पण्डित सचिनजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर में 15 दम्पत्तियों एवं 150 अन्य लोगों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर का संचालन पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा ने किया।

हार्दिक बधाई !

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक पण्डित संभवजी शास्त्री पुत्र श्री शीतलचंदजी जैन नैनधरा (म.प्र.) ने दि.जैन महासमिति जयपुर द्वारा श्रीमती चांदबाई सेठी पारमार्थिक ट्रस्ट के सौजन्य से **क्या आतंकवाद का कारण धार्मिक उन्मादता या राजनीति है और वैश्विक आतंकवाद का समाधान कैसे हो ?** विषय पर आयोजित अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। दिनाँक 11 जुलाई को महावीर पब्लिक स्कूल में आयोजित समारोह में आपको पुरस्कार स्वरूप 4 हजार रुपये नकद एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

जैनपथप्रदर्शक परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

जयपुर शिविर में अवश्य पधारें !

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा संस्थापित तथा संचालित श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में 33 वाँ बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण शिविर दिनांक 1 अगस्त से 10 अगस्त, 2010 तक आयोजित किया जा रहा है।

आप सभी को लाभ लेने हेतु भावभीना आमंत्रण है।

प्रकाशन तिथि : 13 जुलाई 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127